ई-संस्करण, अंक 14

Room to Read®
World Change Starts with Educated Children.®

गपशप

नमस्कार,
आशा है कि आप और आपका परिवार अच्छे से होंगे। जैसा कि आप जानते हैं हम सभी लॉकडाउन में हैं और अपने–अपने घर पर हैं, हमने सोचा कि अपने नियमित समाचार पत्र गपशप का ई–संस्करण लाया जाए। हम आपको लॉकडाउन की इस अवधि के दौरान समय–समय पर इस तरह के ई–गपशप भेजते रहेंगे। आशा है कि आपको इसे पढ़कर अच्छा लगेगा। आप इसे अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों और आपके अनुसार जिन्हें भी इन लेखों को पढ़ने में मज़ा आए उनके साथ साझा कर सकते हैं।
घर पर रहें। सुरक्षित रहें।

आपकी चुलबुली और बुलबुली

भारतीय सिनेमा जगत की प्रथम महिला

मेरी प्यारी सखियों, देविका रानी भारतीय फिल्मों की प्रथम महिला के रूप में जानी जाती हैं। वे समय से आगे की सोच रखने वाली ऐसी प्रगतिशील महिला थीं जिन्होंने भारतीय फिल्मों की यूरोप में भी पहचान बनाई। पति हिमांशु राय के साथ मिल कर उन्होंने बॉम्बे टॉकीज नाम की फिल्म कंपनी बनाई जो दुनिया भर में अपने बेहतरीन काम के लिए प्रसिद्ध हुई।

देविका रानी का जन्म 30 मार्च 1907 को विशाखापत्तनम में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इंग्लैंड में हुई थी। वहीं उन्होंने टेक्सटाइल डिजाइनिंग में कोर्स किया और फिल्मों में वेशभूषा डिजाइन करने की सोची। लंदन में ही हिमांशु राय की फिल्म– अ थ्रो ऑफ डाइस में वेशभूषा एवं कला निर्देशन के साथ फिल्मी दुनिया में पहला कदम रखा। देविका रानी ने इसके बाद जर्मनी जा कर यूरोपीय फिल्म निर्माण को समझने का निश्चय किया। उन्होंने जी डब्लयू पाब्स्ट और फ्रिट्ज लॉन्ग जैसे प्रख्यात फिल्मकारों से प्रभावित हो कर बर्लिन के यूनिवर्सम फिल्म स्टूडियो में फिल्म निर्माण का कोर्स किया।

1933 में भारत लौट कर उन्होंने हिमांशु राय के साथ फिल्म– कर्मा बनाई जिसमे उन्होंने अभिनय किया। यह फिल्म किसी भारतीय द्वारा बनाई गई पहली अंग्रेजी फिल्म थी। इसे भारत, जर्मन और इंग्लैंड के परस्पर सहयोग से बनाया गया था। इस फिल्म को 1933 में लंदन में रिलीज किया गया और इंग्लैंड के शाही परिवार ने फिल्म की बहुत तारीफ की। देविका रानी के काम को दुनिया भर में सराहा गया।

1933 से 1943 के बीच पन्द्रह फिल्मों में अपना योगदान देने के बाद देविका रानी ने फिल्मों से सन्यास ले लिया। इस दौरान उन्होंने निर्मात्री, निर्देशिका, अभिनेत्री व गायिका के रूप में अछूत कन्या (1936), निर्मला (1938), जीवन नैया (1936), जन्मभूमि (1936) और सावित्री (1937) जैसी महत्वपूर्ण फिल्में दीं।

अपनी फिल्म कंपनी बॉम्बे टॉकीज के जरिये कई फिल्मों का निर्माण, निर्देशन, संगीत व अभिनय करने के बाद देविका रानी मनाली में जा कर बस गईं। वहां उन्होंने जंगली जानवरों पर कुछ बेहतरीन डॉक्यूमेंटरीज बनाईं। देविका रानी का निधन 9 मार्च 1994 को बेंगलुरु स्थित उनके निवास पर हुआ।

फिल्म निर्माण क्षेत्र में उपलब्ध कोर्स

फिल्म निर्माण पूरी तरह सृजनात्मक क्षेत्र है, इसलिए क्रिएटिव सोच के युवा जो कुछ नया करना चाहते हैं, कुछ हटकर करने की चाह रखते हैं, उनके लिए यह उपयुक्त क्षेत्र है। यह किसी आम नौकरी की तरह नहीं है, जहाँ कोई डिग्री लेकर आए और उसे तुरंत काम मिल जाता है।

अभिनेता या निर्देशक बनने के लिए आप में टैलेंट होना भी बहुत जरूरी है। इसके अलावा, फिल्म मेकर को खुद एक अच्छा कहानीकार या कहानी की पहचान रखने में सक्षम भी होना चाहिए। अगर आप अभिनेता बनने के इच्छुक हैं, तो आप के अन्दर प्रतिभा और फिल्मों में गहरी रूचि होनी चाहिए।

इस क्षेत्र में पहचान और लोकप्रियता हासिल करना चाहते हैं, तो अपनी रुचि के फील्ड में कोर्स करके ही आना चाहिए। इससे इस क्षेत्र की बुनियादी बातों की जानकारी मिल जाएगी। दरअसल, कोर्स कर लेने से अच्छी शुरुआत मिलने के ज्यादा अवसर होते हैं। किसी भी प्रोडक्शन हाउस और चैनल में आसानी से काम करने का मौका मिल जाता है। कोर्स करने के बाद भी सफलता इस पर निर्भर करती है कि आप चीजों को कितनी जल्दी सीखते हैं।

देश के कई संस्थानों में अभी फिल्म मेकिंग में तीन वर्षीय डिग्री प्रोग्राम से लेकर डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स कराये जाते हैं। इन संस्थानों से आप टेक्निकल कोर्स 12वीं के बाद कर सकते हैं।

डिप्लोमा इन डायरेक्शन/निर्देशन	डिप्लोमा इन सिनेमेटोग्राफी,
डिप्लोमा इन साउंड रिकार्डिंग ऐंड साउंड डिजाइन	डिप्लोमा इन वीडीयो एडिटिंग,
बैचलर ऑफ फिल्म टेक्नोलॉजी	डिप्लोमा इन आर्ट डायरेक्शन ऐंड प्रोडक्शन डिजाइन
सर्टिफिकेट कोर्स इन स्क्रीनप्ले राइटिंग	डिप्लोमा इन वीडियो प्रोडक्शन

अपने परिवार के साथ मिलकर पता लगाओ

यहाँ दी गई तस्वीरों को पहचानो।
यह सब फिल्म निर्माण में आवश्यक हैं। अब यह पता लगाओ की इनके नाम क्या हैं?
तुम चाहो तो एस एम दीदी की मदद ले सकती हो।